राजस्थान में मनरेगा में महिला सशक्तिकरण

(टोंक जिले के विशेष संदर्भ में एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

डॉ. विजय लक्ष्मी चौधरी
असिस्टेंट प्रोफेसर
निर्वाण विश्वविद्यालय जयपुर, राजस्थान

MGM Publishing House
JAIPUR • DELHI

© *Author*

All Rights Reserved. No part of this publication may be reproduced or copied in any material form (including photo copying or storing it in any medium in form of graphics, electronic or mechanical means and whether or not transient or incidental to some other use of this publication) without written permission of the copyright owner.

ISBN: 978-81-967940-9-5

Edition: 2024

Price: Rs. 1095/-

Published by:
MGM Publishing House
Head Office
Plot No. 4, Shop No. 315
Airport Plaza, Balaji Tower-6
Durgapura, Jaipur - 302015 India

Branch Office
Flat No. 14, RZF-768/21, Rajnagar-II Dwarka
Sector-8, Delhi NCT, New Delhi-110077

Printed by:
In-house-Digital
Jaipur-302018

Disclaimer

The publisher have taken all care to insure highest standard of quality as regards type setting, proofreading, accuracy of textual material, printing and binding. However, neither they nor the author accept responsibility for any lose occasioned as a result of any misprint or mistake found in this publication.

आभार

इस पुस्तक को पूर्णता तक पहुँचाने का यह सफर मेरे लिए न केवल एक व्यक्तिगत उपलब्धि है, बल्कि उन सभी व्यक्तियों के सहयोग, प्रेरणा और मार्गदर्शन का प्रतीक भी है, जिन्होंने इसे सफल बनाने में योगदान दिया।

सबसे पहले, मैं अपनी इष्ट "माँ सान्धोल्यां" के चरणों में इसे समर्पित करती हूँ। उनके आशीर्वाद और कृपा से ही यह कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण हो पाया।

मैं अपने माता–पिता और पूजनीय गुरुओं प्रो. अरविंद कुमार अग्रवाल, प्रो. हितेन्द्र सिंह और प्रो. मंजु सिंह के प्रति हृदय से आभार प्रकट करती हूँ, जिनके अमूल्य मार्गदर्शन और प्रोत्साहन ने इस पुस्तक को सही दिशा में विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मैं अपने जीवनसाथी का विशेष आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके अटूट प्रेम और समर्थन ने मुझे हर चुनौती का सामना करने की शक्ति दी। उनके सहयोग के बिना इस यात्रा की कल्पना भी संभव नहीं थी।

साथ ही, मैं अपने बेटे के प्रति भी कृतज्ञ हूँ, जिसने मेरी अकादमिक यात्रा और कर्मक्षेत्र के लिए सबसे अधिक त्याग किया। उसी के सहयोग और समझ ने इस यात्रा को संभव बनाया।

मेरे मित्रों और सहकर्मियों का भी मैं धन्यवाद करती हूँ, जिन्होंने गहन चर्चाओं, रचनात्मक आलोचनाओं और प्रोत्साहन के माध्यम से मेरी सोच को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। मैं उन सभी पुस्तकालयों की भी आभारी हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक के लिए आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराई और मेरे इस कार्य को समृद्ध किया। साथ ही, मैं प्रो. रविकान्त मोदी का आभार प्रकट करती हूँ, जिनके प्रोत्साहन, मार्गदर्शन और सहयोग के बिना यह पुस्तक संभव नहीं हो पाती। एम.जी.एम. प्रकाशक और उनकी टीम का हृदय से धन्यवाद, जिन्होंने इस पुस्तक को उत्कृष्टता के साथ पाठकों तक पहुँचाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अंत में, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण, मैं इस पुस्तक के पाठकों का हृदय से आभार प्रकट करती हूँ। आपकी रुचि और सराहना मेरे इस प्रयास का सबसे बड़ा पुरस्कार है। आपकी प्रतिक्रिया और प्रेरणा मेरे भविष्य के लेखन का आधार बनेगी।

आप सभी का दिल से धन्यवाद।

सादर,

डॉ. विजय लक्ष्मी चौधरी

आमुख

महिलाएँ देश की आधी आबादी हैं, और उनके बिना देश का समग्र विकास संभव नहीं है। महिलाओं की भूमिका केवल परिवार तक सीमित नहीं है; वे सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। इसके बावजूद, भारतीय समाज में महिलाओं को लंबे समय तक उपेक्षा और असमानता का सामना करना पड़ा है। उन्हें शिक्षा, रोजगार, और सामाजिक अधिकारों से वंचित रखा गया, जिससे उनका व्यक्तिगत और सामूहिक विकास बाधित हुआ। इस स्थिति को सुधारने के लिए, समय–समय पर सरकार ने कई नीतियाँ और योजनाएँ लागू की हैं। इन योजनाओं का उद्देश्य महिलाओं का उत्थान, विकास, कल्याण और सशक्तिकरण सुनिश्चित करना है।

इन योजनाओं की श्रृंखला में ''महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा)'' का विशेष स्थान है। मनरेगा न केवल ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सुनिश्चित करता है, बल्कि यह महिलाओं को सशक्त बनाने का एक प्रभावी माध्यम भी है। इस योजना के तहत ग्रामीण महिलाओं के लिए कम से कम एक तिहाई (33 प्रतिशत) भागीदारी सुनिश्चित की गई है। इस पहल ने महिलाओं को समाज में उनकी भूमिका को पुनः परिभाषित करने का अवसर प्रदान किया है।

मनरेगा में महिला और पुरुष दोनों के लिए समान कार्य के लिए समान वेतन का प्रावधान है। यह आर्थिक समानता की दिशा में एक बड़ा कदम है। इसके अलावा, महिलाओं की भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए कार्यस्थल पर कई विशेष सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं। इनमें शिशु देखभाल केंद्र, पेयजल सुविधा, और महिलाओं की सुरक्षा के लिए उचित प्रावधान शामिल हैं। ये सुविधाएँ न केवल महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने में मदद करती हैं, बल्कि उनके आत्मविश्वास और कार्यक्षमता को भी बढ़ाती हैं।

मनरेगा का उद्देश्य केवल रोजगार प्रदान करना नहीं है, बल्कि महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक सशक्तिकरण की दिशा में प्रेरित करना भी है। यह योजना महिलाओं के पारिवारिक और सामाजिक जीवन पर गहरा प्रभाव डालती है। रोजगार प्राप्त करने के माध्यम से महिलाओं की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है, जिससे वे अपने परिवार के वित्तीय निर्णयों में सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं। यह उनकी पारंपरिक भूमिका को चुनौती देता है और उन्हें समाज में नई पहचान दिलाने में सहायक सिद्ध हो रहा है।

मनरेगा ने ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को उनके अधिकारों और अवसरों के प्रति जागरूक किया है। यह योजना न केवल महिलाओं को रोजगार प्रदान करती है, बल्कि उन्हें सम्मानजनक कार्य और समाज में स्वीकृति भी दिलाती है। इससे उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव आए हैं,

जैसे निर्णय लेने की क्षमता में वृद्धि, सामाजिक रिश्तों में सुधार, और बच्चों की शिक्षा एवं स्वास्थ्य पर ध्यान देने की प्रवृत्ति।

इस पुस्तक में मनरेगा के माध्यम से महिलाओं के सशक्तिकरण के सभी पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की गई है। इसमें यह भी विश्लेषण किया गया है कि इस योजना ने महिलाओं के जीवन में किस प्रकार आर्थिक, सामाजिक, और पारिवारिक परिवर्तन लाए हैं। पुस्तक का उद्देश्य न केवल महिलाओं के सशक्तिकरण की प्रक्रिया को समझना है, बल्कि उन चुनौतियों और समाधानों पर भी चर्चा करना है, जो इस योजना के प्रभाव को और अधिक प्रभावी बना सकते हैं।

यह पुस्तक मनरेगा के माध्यम से महिलाओं के सशक्तिकरण की प्रक्रिया को समझने का एक प्रयास है। यह न केवल योजना के सकारात्मक प्रभावों को उजागर करती है, बल्कि उन क्षेत्रों पर भी प्रकाश डालती है जहाँ और सुधार की आवश्यकता है। यह पुस्तक नीति–निर्माताओं, शोधकर्ताओं, और पाठकों को इस योजना के महत्व और इसके व्यापक सामाजिक प्रभावों को समझने में मदद करेगी।

मनरेगा ने यह सिद्ध किया है कि यदि महिलाओं को समान अवसर और संसाधन प्रदान किए जाएँ, तो वे न केवल अपने परिवार, बल्कि पूरे समाज को सशक्त बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। इस पुस्तक का उद्देश्य इस संदेश को और अधिक प्रभावी रूप से प्रसारित करना है।

डॉ. विजय लक्ष्मी चौधरी

पुस्तक परिचय

यह पुस्तक महिलाओं के सशक्तिकरण में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) की भूमिका का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करती है। पुस्तक में इस बात पर जोर दिया गया है कि महिलाओं की भागीदारी और सशक्तिकरण के बिना समाज और देश का समग्र विकास संभव नहीं है।

पुस्तक की मुख्य विषयवस्तु

यह पुस्तक महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने में मनरेगा के योगदान पर आधारित है। इसमें विस्तार से बताया गया है कि कैसे मनरेगा ने ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में मदद की है। पुस्तक के मुख्य बिंदु निम्नलिखित हैं:

1. समान कार्य और समान वेतन का प्रावधानः महिलाओं को समान वेतन देकर उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत की गई है।
2. कार्यस्थलों पर विशेष सुविधाएँः जैसे शौचालय, बच्चों की देखभाल के स्थान आदि।
3. आर्थिक स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरताः महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए उन्हें रोजगार के अवसर प्रदान किए गए हैं।
4. सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तनः महिलाओं की भागीदारी से उनके प्रति समाज का दृ ष्टिकोण बदल रहा है।
5. महिलाओं की सामाजिक भागीदारीः पुस्तक इस बात पर भी प्रकाश डालती है कि कैसे मनरेगा ने महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया और उन्हें सामाजिक गतिविधियों में शामिल होने का अवसर प्रदान किया।

लेखकीय दृष्टिकोण

पुस्तक में लेखक ने इस बात पर प्रकाश डाला है कि मनरेगा जैसी योजनाएँ महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए कितनी महत्वपूर्ण हैं। पुस्तक के प्रत्येक अध्याय में महिलाओं की आर्थिक और सामाजिक प्रगति का एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ ही, यह भी बताया गया है कि महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए नीति और कार्यान्वयन के स्तर पर क्या बदलाव किए जा सकते हैं।

निष्कर्ष

यह पुस्तक न केवल मनरेगा की सफलता की कहानी है, बल्कि यह महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में एक प्रेरणादायक दस्तावेज है। यह उन सभी पाठकों के लिए उपयोगी है जो महिला सशक्तिकरण, ग्रामीण विकास और सामाजिक सुधार के क्षेत्र में रुचि रखते हैं।

पुस्तक की विशेषताएँः

यह पुस्तक शोधार्थियों, नीति–निर्माताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, और शिक्षाविदों के लिए अत्यंत उपयोगी है। यह न केवल एक अध्ययन सामग्री है, बल्कि समाज में परिवर्तन लाने के लिए एक प्रेरणा स्रोत भी है। यह पुस्तक महिलाओं के अधिकार, उनकी भागीदारी, और समाज में उनके बढ़ते योगदान की कहानी कहती है। यह पाठकों को महिलाओं की क्षमता और योगदान को समझने के लिए एक नई दृष्टि प्रदान करती है।

विषय–सूची

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
	आभार	*i*
	आमुख	*ii*
	पुस्तक परिचय	*iv*
1	*अवधारणात्मक स्पष्टीकरण*	*01-58*
2	*अनुसंधान प्रविधि*	*59-69*
3	*मनरेगा में कार्यरत महिलाओं की सामाजिक – आर्थिक पृष्ठभूमि*	*70-79*
4	*मनरेगा में महिलाओं से सम्बन्धित प्रावधान एवं सुविधाएँ*	*80-103*
5	*मनरेगा एवं महिला सशक्तिकरण*	*104-143*
6	*निष्कर्ष एवं उभरते आयाम*	*144-154*
	ग्रन्थ सूची	*155-162*

♦❐♦